ग़ज़ल-क्रम

दिलों में, जह्न में, इक-इक नज़र में पानी है
हुई जो बारिशें पूरे ही घर में पानी है 23

सुलगती धूप में सर पर तेरा आँचल मिला मुझको
ऐ साक़ी! मैं बहुत प्यासा हूँ थोड़ा जल पिला मुझको 24

जैसे मिल जाए दवा ऐसा हुआ सर्दी में
आई किस ओर से ये गर्म हवा सर्दी में 25

ज़रा मन भी सजाकर रख ये सजधज ऊपरी ही क्यों
है कितनी ख़ूबसूरत ज़िल्द, मैली डायरी ही क्यों 26

अगर हम अपने दिल को अपना इक चाकर बना लेते
तो अपनी ज़िंदगी को और भी बेहतर बना लेते 27

न सोचिए कि अकेले ये फूल नाचते हैं
बहार आई तो सँग-सँग बबूल नाचते हैं 28

कितना कम सोया हूँ रातों में भी मैं जागा बहुत
ऐ ग़ज़ल, तेरे लिए तेरी तरफ़ भागा बहुत 29

चलते-चलते तेरे दर तक ही चला आया था वो
और क्या करता ज़माने भर का ठुकराया था वो 30

तेरे चेहरे से मेरा ग़म अगर ज़ाहिर हुआ तो
ज़माने भर में हंगामा अगर्चे फिर हुआ तो 31

जो इक तस्वीर आँखों में थी वो ही हू-ब-हू रख ली
छुपाकर मेरे दिल ने आज फिर इक आरज़ू रख ली 32

मौत तो आनी है तो फिर मौत का क्यों डर रखूँ
ज़िंदगी आ, तेरे क़दमों पर मैं अपना सर रखूँ 33

वो इस जहाँ के पार है मैं इस जहान तक
ये दूरियाँ रहेंगी मगर इम्तहान तक 34

फिर अधूरी-सी कहानी ने ख़ुदकुशी कर ली
एक मासूम जवानी ने ख़ुदकुशी कर ली 37

मुक्त करता है प्यार का बंधन
गूँज को ज्यों सितार का बंधन 38

अब भी दिल में ख़ुशबुओं का इक सफ़र मौजूद है
मुझमें पहले प्यार की पहली ख़बर मौजूद है 39

अधर चुप हैं मगर मन में कोई संवाद ज़ारी है
मैं ख़ुद में लीन हूँ लेकिन किसी की याद ज़ारी है 40

कभी जब पीछे मुड़कर देखता हूँ
कई यादों से जुड़कर देखता हूँ 41

दिल पिघलता ही गया ऐसी नज़र है तुझमें
बर्फ़ को धूप दिखाने का हुनर है तुझमें 42

रफ़्तः रफ़्तः जो हक़ीक़त थे, कहानी हो गए
ख़ून से सींचे हुए रिश्ते भी पानी हो गए 43

ग़म की इक रात जो ढलनी थी वो ढलती ही नहीं
ज़िंदगी क्यूँ ये नज़र तेरी बदलती ही नहीं 44

सबकी बात न माना कर
ख़ुद को भी पहचाना कर 45

टूट जाऊँगा कभी टूट के जुड़ जाऊँगा
आप जिस राह पे मोड़ेंगे, मैं मुड़ जाऊँगा 46

गुलों में ज्यों चमन की ख़ुशबुएँ मौजूद रहती हैं
कहीं जाऊँ, वतन की ख़ुशबुएँ मौजूद रहती हैं 47

यों ठंडी हवा घर में मेरे आई नहीं है
पछवा है इधर झूमती पुरवाई नहीं है 49

कोई रस्ता है न मंज़िल न तो घर है कोई
आप कहिएगा सफ़र ये भी सफ़र है कोई 53

इक तेरे इश्क़ का दीपक है हमारे दिल में
आते रहते हैं नज़र कितने नज़ारे दिल में 55

ज़िंदगी यूँ भी जली, यूँ भी जली मीलों तक
चाँदनी चार क़दम, धूप चली मीलों तक 57

बहुत अचरज है लेकिन ख़ुश हूँ मन में
तुम्हारी ख़ुशबुएँ मेरे बदन में 58

जैसे कि लफ़्ज़ अपनी किताबों के साथ हैं
आँखें हमारी आपके ख़्वाबों के साथ हैं 60

महक कलियों में, ख़ुशबू फूल के प्यालों में कितनी है
कोई समझे कि काँटों की चुभन डालों में कितनी है 61

बिजली की तड़प भी है, गिरता हुआ पानी भी
बरसात का मौसम है अब अपनी कहानी भी 62

इक खिलते हुए हँसते चमन की किताब है
आँखों में मेरी उसके बदन की किताब है 64

वो जो अपनी तलाश में हैं सब
वो अँधेरे प्रकाश में हैं सब 65

अपना-अपना ख़याल है प्यारे
ज़िंदगी बेमिसाल है प्यारे 66

सच तो यह है कि मुझमें भी वो है
जिसकी हर पल तलाश सबको है 67

ग़मों से उसका नाता है बराबर
मगर वो मुस्कराता है बराबर 68

बेख़ुदी में तू ही तू गाता था इकतारे के साथ
यूँ तो कितनी भीड़ थी उस मस्त बंजारे के साथ 70

मुझसे अब यह भी शिकायत है ज़माने भर की
मुझपे दो गज़ ये जगह क्यों है ठिकाने भर की 71

जीवन तुझे देते हैं घन माना घनेरे भी
दरिया तेरे पानी में कुछ अश्क हैं मेरे भी 72

हादसे ही हादसे हैं सावधानी क्या करे
इतने अंगारों पे इक-दो बूँद पानी क्या करे 73

जब शुरू करती हैं दिल में अच्छी बातें घूमना
बंद कर देती हैं अक्सर वारदातें घूमना 74

हमसे रिश्ते हैं ख़ास पानी के
हम हैं बादल, लिबास पानी के 75

आएगा तेरे घर पे कोई दूर से चलकर
चल तू भी ज़रा बैठ नए कपड़े बदल कर 76

ज़िंदगी यह बताओ कैसी हो
वैसे लग तो रहा है अच्छी हो 77

नाव से पहले नदी ने तट पे आने को कहा
तट पे पहुँची तो भँवर में डूब जाने को कहा 79

काँपता है दिल मेरा उसकी तरफ़ बढ़ते हुए
जैसे काँपे कोई क़ातिल की तरफ़ बढ़ते हुए 80

देखना तो, रूप कुछ उसका बदल पाया है क्या
दिल हमारा प्यार के साँचे में ढल पाया है क्या 81

ख़ुशी के पल मुसाफ़िर हैं बहुत कम साथ रहते हैं
हमारे ग़म ही अपने हैं जो हरदम साथ रहते हैं 82

घड़ा जैसे ही कुछ थोड़ा भी चटका, छोड़ जाती हैं
सभी पनिहारिनें पनघट पे मटका छोड़ जाती हैं 83

इक नशेमन के सुलगने की ख़बर आज भी है
तुझपे ऐ इश्क़ ज़माने की नज़र आज भी है 84

हर कोई है निवास ख़ुशबू का
फूल जैसे लिबास ख़ुशबू का 87

पास तेरे तो हम ज़रूर हुए
ख़ुद से लेकिन बहुत ही दूर हुए 88

दिख रहा है नक़ाब लफ़्ज़ों में
है कोई माहताब लफ़्ज़ों में 89

अपना जीवन निहाल कर लेते
औरों का भी ख़याल कर लेते 91

तू नहीं है तो क्या है दुनिया में
एक तन्हा हवा है दुनिया में 92

तुमसे प्यारा नहीं कहीं कोई
अब हमारा नहीं कोई 93

एक गहरे से समंदर में उतर जाती है रोज़
मेरी ये अपनी हँसी आँसू के घर जाती है रोज़ 94

ज़माने भर में ख़ुशबू-सा बिखर कर
हमारी भी तरफ़ अपनी नज़र कर 95

मछलियों का ज्यों समंदर दूर तक
है मेरी नज़रों का भी घर दूर तक 96

करूँ क्या दिल को समझाते ही झरने फूट पड़ते हैं
किसी की याद के आते ही झरने फूट पड़ते हैं 98

न ख़ुशियाँ दीं न ग़म बाँटा किसी का
तो क्या मतलब है ऐसी ज़िंदगी का 99

रूहें यों तन के लिबासों में सफ़र करती हैं
चिट्ठियाँ जैसे लिफ़ाफ़ों में सफ़र करती हैं 100

वो भी औरत-सी है लाचार, नहीं बोलेगी
कुछ भी लिख दीजिए दीवार नहीं बोलेगी 102

लोग कर जाएँगे विश्वास में घातें, लिख लो
अपने दिल पे ये मेरी आज की बातें लिख लो 104

जब उजाले में वो आई, गुनाह ही निकली
गोरी चीज़ों की भी छाया सियाह ही निकली 105

आज तक जितने ग़ज़लकार ग़ज़ल तक आए
सबने चाहा है यही, प्यार ग़ज़ल तक आए 106

कोई उस पेड़ से सीखे मसीबत में अड़े रहना
कि जिसने बाढ़ के पानी में भी सीखा है अड़े रहना 108

यहाँ क्या अर्थ है अपना यही बोले, यही बोले
तुम्हारे धूप में रक्खे हुए दीपक सही बोले 109

खनक उठती हैं टकराकर भी उनसे चूड़ियाँ सारी
कड़ों से सीखिए रिश्ते निभाने की हुनरदारी 110

ज्यों नदी अपने मुहानों को नहीं काटती है
याद भी गुज़रे ज़मानों को नहीं काटती है 112

दिलों की साँकलें और ज़ह्न की ये कुंडियाँ खोलो
बड़ी भारी घुटन है, द्वार खोलो, खिड़कियाँ खोलो 117

कहाँ हैं वो नई गहराइयाँ हँसने-हँसाने में
मिलेंगी जो किसी के साथ दो आँसू बहाने में 119

दिये-सी देह में इक रौशनी सघन पहने
हम आत्मा हैं मगर घूमते हैं तन पहने 121

जब चढ़ी त्यौरियाँ नज़र आईं
उसकी कमज़ोरियाँ नज़र आईं 124

समंदर था, लहर थी और मैं था
किनारे पर नज़र थी और मैं था 125

है हर क़दम पे कोई नई कील इन दिनों
चलना है फिर भी मुझको कई मील इन दिनों 126

जो थे शीशे में ढालने वाले
अब हैं पत्थर उछालने वाले 127

ख़ुद को ऐसे न तू सताया कर
चार-छह पल तो मुस्कुराया कर 128

अँधियारे के बीच उजेरी तस्वीरें
मेरे ड्रांइगरूम में तेरी तस्वीरें 129

याद कुछ इस तरह सताती है
टुकड़ों-टुकड़ों में नींद आती है 130

आँखों में है ये पहली मुलाक़ात का पानी
ज्यों पहली-पहली बार की बरसात का पानी 131

एक सपना हज़ार आँखों में
इक तेरा इंतज़ार आँखों में 132

किसी ने भी न उनके शूल देखे
सभी ने डालियों पर फूल देखे 133

उनके साँचों में ढल नहीं पाए
हमसे रिश्ते सँभल नहीं पाए 134

तुमने पूछा है तो ब ताता हूँ
मैं तुम्हारे ही गीत गाता हूँ 135

उसके होठों पे 'कुँअर' 'ना' है और 'हाँ' भी है
एक चुप्पी है मगर उसमें इक बयाँ भी है 136

तुम्हारे, प्यार के उजले-से पल बनकर चले आए
मेरे सुख-दुख सभी आख़िर ग़ज़ल बनकर चले आए 137

दिल में कितने नए भूचाल लिए बैठी है
एक मज़बूर जो जयमाल लिए बैठी है 138

बहुत कुछ भूल जाना है, बहुत कुछ याद करना है
मुझे ताउम्र इस ही पंक्ति का अनुवाद करना है 139

बंद आँखों को मेरी उसके ख़यालों ने छुआ
यूँ लगा जैसे अँधेरों को उजालों ने छुआ 140

हर ओर चल रही हैं रुसबाइयों की बातें
सड़कों पे आ गई हैं अँगनाइयों की बातें 141

पाँव पानी में, कमर पानी में, सर पानी में
डूबती जाती है यूँ पूरी उमर पानी में 142

हक़ीक़त ही बताता है न अपना राज़ देता है
मुझे मेरे ही अंदर से कोई आवाज़ देता है 144